'उपन्यास का स्वरूप का वि...

डॉ. सतीश चन्द्र पाठक

JANUARY' 18

10 Day 010-355 Wk-02 WEDNESDAY

Wednesday 3 10 17 24 31
Thursday 4 11 18 25
Friday 5 12 19 26
Saturday 6 13 20 27
Sunday 7 14 21 28

पात्र को उपन्यास का प्राण तत्व मानता हूँ। प्राणतत्व इसलिए कि कथानक का आधार पात्र है तो मैं चरित्र-चित्रण या पात्र को उपन्यास का प्राण तत्व मानता हूँ। प्राणतत्व इसलिए कि कथानक का आधार पात्र है वैसे ही भाषा-शैली भी संवाद का आधार भी पात्र ही है। अतः पात्र उपन्यास का प्रमुख तत्व है। पात्र के आधार पर ही खड़ा है। पात्रों का चयन लेखक द्वारा इसी समाज से किया जाता है। अतः समाज का सम्यक स्वरूप इनमें प्रतिबिम्बित होता है। उपन्यास में उपलब्ध पात्रों की प्रायः दो ~~श्रेणी~~ श्रेणियां होती हैं - (i) प्रतिनिधि पात्र और (ii) व्यक्ति पात्र

प्रतिनिधि पात्र एक बड़े समुदाय का प्रतिनिधित्व करता हुआ प्रतीक होता है। यानी जिस वर्ग या समुदाय विशेष का वह प्रतिनिधि होता है उसके चरित्र में उस वर्ग की अधिकांश विशेषताएं प्रतिबिंबित होती हैं - ऐसे पात्रों को प्रतिनिधि पात्र या वर्गगत पात्र कहा जाता है। जैसे गोदान का होरी भारतीय किसान का प्रतिनिधि पात्र है। भारतीय किसान की विशेषताएं, असमर्थताएं, चरित्रगत कमजोरियां और खूबियां - होरी के चरित्र में मूर्तिमान हैं। इसीलिए होरी एक वर्गगत या प्रतिनिधि पात्र का श्रेष्ठ उदाहरण है।

(ii) व्यक्ति पात्र - ऐसे पात्रों की अपनी विशेषता होती है। ये किसी भी वर्ग का प्रतिनिधित्व नहीं करते वरन केवल अपना प्रतिनिधि होते हैं। वे दूसरे से सर्वथा भिन्न विशेषताओं वाले होते हैं। किन स्थितियों में इनकी कैसी प्रतिक्रिया होगी इसका अनुमान सहज ही नहीं लगाया जा सकता। इनके चरित्र में एक विशिष्टता होती है जो उन्हें समुदाय से अलग कर देती है। वे समाज में रहकर भी उससे भिन्न होते

notes
Phone
email
website

इनके सोचने और प्रतिक्रिया का तरीका सर्वथा भिन्न होता है। जहाँ पर भी ऐसी विशिष्टता चरित्र में मिले उसे व्यक्ति पात्र या व्यक्ति चरित्र कहा जाएगा जैसे सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय के उपन्यास शेखर एक जीवनी का नायक - शेखर एक व्यक्ति पात्र है। पूरा उपन्यास पढ़ जाने के बाद भी शेखर की विभिन्न स्थितियों में उसकी प्रतिक्रिया की दिशा का अनुमान लगाना कठिन है। उसका चिंतन, उसका व्यवहार विचित्र है या कहें सामान्य नहीं है। वह अपना प्रतिमान स्वयं है उसकी किसी से भी तुलना नहीं हो सकती। अतः वह व्यक्ति पात्र है। इसी प्रकार अन्य स्थूल वर्गीकरण को देखें तो - आदर्श पात्र, दुष्ट या खलपात्र, स्त्री पात्र, पुरुष पात्र इत्यादि वर्गीकरण भी संभव है। किन्तु सच पूछा जाए तो समाज में जितने प्रकार के लोग हैं पात्र के प्रकार भी उतने ही हो सकते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि पात्र उपन्यास का मुख्य तत्व है जिसके अभाव में उपन्यास की कल्पना असंभव है।

(iii) कथोपकथन या संवाद

यह उपन्यास का तीसरा प्रधान तत्व है। जब पात्र आपस में संवाद करते हैं तब उपन्यास को गति मिलती है। प्राचीन काल के उपन्यास नुमा कथाओं में संवाद का अभाव होता था। या हमारी कथाओं में जिसमें राजा या ब्राह्मण या ठाकुर इत्यादि की कथा होती थी, मैं वक्ता ही समस्त पात्रों की ओर से बोलता था और उत्तर भी देता था। सच पूछा जाए तो यह स्थिति बड़ी अटपटी होती थी। इससे न केवल कथा प्रवाह में बाधा आती थी वरन् चित्रण का भी अभाव होता था। यह अत्यंत आवश्यक है कि जब एक स्थान पर अनेक पात्र उपस्थित हों तो आपस में संवाद करें